पाठ 20

अमीर खुसरो की पहेलियाँ

4HYN8T

पहेलियाँ बूझने–बुझाने का खेल बच्चे खेलते ही रहते हैं। गाँव और शहर दोनों में ये पहेलियाँ खूब प्रचलित हैं। लेकिन यह कहना कठिन है कि इनमें से कौन–सी पहेली किसने रची है। हाँ, पहेलियाँ रचने के संबंध में एक नाम बहुत प्रसिद्ध है। वह है– अमीर खुसरो। अमीर खुसरो और उनकी पहेलियों के संबंध में इस पाठ में पढ़ेंगे।

आज से लगभग 700 वर्ष पहले भारत में गुलाम वंश का एक बादशाह था– बलबन। उसके समय में ही दिल्ली में हज़रत निजामुद्दीन औलिया नाम के एक संत थे। उनका एक आठ वर्ष का प्यारा शिष्य था– अमीर खुसरो। खुसरो बड़ा होकर अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर बलबन का राज–दरबारी बना।

खुसरो अरबी, फारसी, तुर्की और हिंदी के विद्वान् थे। उन्हें संस्कृत भाषा का भी थोड़ा ज्ञान था। उन्होंने फारसी में तो बहुत श्रेष्ठ रचनाएँ कीं; हिंदी में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। खुसरो एक अच्छे संगीतज्ञ भी थे। कहा जाता है कि सितार का आविष्कार खुसरो ने ही किया था।

खुसरो इसलिए भी प्रसिद्ध हैं कि हिन्दी की खड़ी बोली में कविता लिखनेवाले वे सर्वप्रथम कवि माने जाते हैं। यहाँ उनकी कुछ चुनी हुई पहेलियाँ दी जा रही हैं। इन्हें पढ़ो और बूझो–

(1) धूपों से वह पैदा होवे,
छाँव देख मुरझाए।
एरी सखी मैं तुझसे पूछूँ,
हवा लगे मर जाए।।

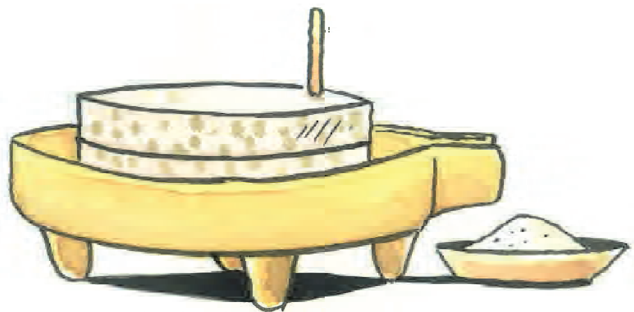

(2) एक नारि के हैं दो बालक,
दोनों एकहि रंग।
एक फिरै एक ठाढ़ा रहे,
फिर भी दोनों संग।।

शिक्षण–संकेत : पहेलियों के संबंध में कक्षा में चर्चा करें। स्थानीय बोली की कुछ पहेलियाँ बच्चों से बूझें। उन्हें बताएँ कि यह खेल दिमाग का है। पत्र–पत्रिकाओं में पहेलियाँ प्रकाशित होती रहती हैं, उन्हें पढ़ने और बूझने के लिए प्रेरित करें। बच्चों को अपनी–अपनी बोली (भाषा) की पहेलियों का संग्रह कर बूझने के लिए प्रेरित करें।

(3) आदि कटे तो सबको पाले,
मध्य कटे तो सबको मारे।
अंत कटे से सबको मीठा,
खुसरो वाको आँखों दीठा।।

(4) एक कहानी मैं कहूँ,
तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गया,
बाँध गले में सूत।।

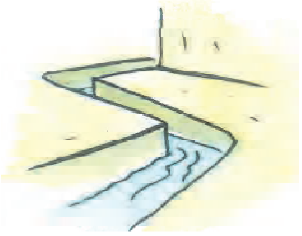

(5) सावन–भादों बहुत चलत है,
माघ–पूस में थोरी।
अमीर खुसरो यों कहे,
तू बूझ पहेली मोरी ।।

(6) बीसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना खून किया।।

(7) जल–जल चलती बसती गाँव,
बस्ती में ना वाका ठाँव।
खुसरो ने दिया वाका नाँव,
बूझ अरथ नहिं छोड़ो गाँव।।

(8) घूम–घुमेला लहँगा पहिने,
एक पाँव से रहे खड़ी।
आठ हाथ हैं उस नारी के,
सूरत उसकी लगे परी।।

(9) एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उसका एक न गिरे।

शब्दार्थ

दीठा	—	देखना	वाका	—	उसका
नारि	—	स्त्री	नाँव	—	नाम, नाव
सूत	—	धागा	थोरी	—	थोड़ी, कम
पूत	—	पुत्र	सूरत	—	शक्ल
मध्य	—	बीच			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 वह कौन–सी चीज है जो धूप में पैदा होती है, लेकिन हवा लगते ही मर जाती है?

प्रश्न 2 चक्की के कितने पाट होते हैं ?

प्रश्न 3 मोरी (नाली) पूस–माघ के महीनों में धीमी और कम क्यों चलती है ?

प्रश्न 4 छतरी के कितने पाँव और कितने हाथ होते हैं ?

प्रश्न 5 वह कौन–सा थाल है, जो मोतियों से भरा होता है ?

प्रश्न 6 'सूरत उसकी लगे परी' इस पहेली में परी के समान सूरत की बात कही गई है। सोचकर लिखो कि परी की सूरत में क्या खास बात रहती है ?

प्रश्न 7 छत्तीसगढ़ी में पहेली को क्या कहते हैं ? छत्तीसगढ़ी बोली की दो पहेलियाँ लिखो।

भाषातत्त्व और व्याकरण

- पाठ के शब्दों के अर्थ भी पूर्ववत् पूछे जाएँ और उनका प्रयोग कराएँ।

प्रश्न 1 इस पाठ में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग हुआ है–

नार, छाँव, ठाढ़ा, पूत, परों, लहँगा, औंधा।

इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके लिखो।

गतिविधि

- अपने बड़े–बुजुर्गों से पहेलियाँ एकत्रित करो और कक्षा में सुनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पंखा, किताब, शिक्षक, पानी, मोर, बादल, आदि पर पहेलियाँ बनाओ।